रिसाला नं. : 68

Jannati Mahal Ka Sauda (Hindi)

जन्नती महल का सौदा

- हर नेक बन्दे का एह्तिराम कीजिये 6
- गुस्ताख़ का इब्रतनाक अन्जाम 6
- इबादत से दूरी का वबाल 15
- इन्फ़िरादी कोशिश के 2 यादगार वाक़िआ़त 21
- दुश्मन को दोस्त बनाने का नुस्ख़ा 24
- ग़ैर ज़रूरी ता'मीरात की हौसला शिकनी 28

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा। ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(مستطرف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

ता़लिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاريخ دمشق لابن عساكر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक-त-बतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

म-दनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें राबित़ा न फ़रमाएं।

...राबित़ा :- मजलिसे तराजिम

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

☎ 9327776311 E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ھ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = ای/ی	इ = اِ	ऐ = اے	ए = ے	य = ی

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

जन्नती महल का सौदा[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए तह़रीरी बयान का येह रिसाला (37 सफ़ह़ात) अव्वल ता आख़िर पढ़ लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़िक्रे आख़िरत नसीब होगी ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मालिके ख़ुल्दो कौसर, शाहे बह्रो बर, मदीने के ताजवर, अम्बिया के सरवर, रसूलों के अफ़्सर, रसूले अन्वर, मह़बूबे दावर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और **मुसा-फ़ह़ा** करें और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर **दुरूदे पाक** भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।"

(مسند ابی یعلی، ج۳، ص۹۵، حدیث ۲۹۵۱ دارالکتب العلمیہ بیروت)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار एक बार बसरा के एक मह़ल्ले में एक ज़ेरे ता'मीर **आ़लीशान महल** के अन्दर दाख़िल हुए, क्या देखते हैं कि एक ह़सीन नौ जवान मज़दूरों, मिस्तरियों

مدینہ

(1) शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (27 र-मज़ानुल मुबारक 1429 हि. ❁ 28-09-2008) में फ़रमाया था जो ज़रूरतन तरमीम के साथ त़ब्अ़ किया गया। **मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

और काम करने वालों को बड़े इन्हिमाक के साथ हर हर काम की हिदायत दे रहा है। **ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने अपने रफ़ीक़ ह़ज़रते सय्यिदुना **जा'फ़र बिन सुलैमान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان से फ़रमाया : "मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये येह नौ जवान **महल** की ता'मीर व तज़्ईन (या'नी ज़ैबो ज़ीनत) के मुआ़-मले में किस क़दर दिलचस्पी रखता है मुझे इस के ह़ाल पर रह़्म आ रहा है मैं चाहता हूं कि **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ करूं कि इसे इस ह़ाल से नजात दे, क्या अ़जब कि येह जवानाने जन्नत से हो जाए।" येह फ़रमा कर **ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन सुलैमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان के साथ उस के पास तशरीफ़ ले गए, सलाम किया। उस ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को न पहचाना। जब तआ़रुफ़ हुवा तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़ूब इ़ज़्ज़तो तौक़ीर की और तशरीफ़ आ-वरी का मक़्सद दरयाफ़्त किया। **ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने (उस नौ जवान पर इन्फ़िरादी कोशिश का आग़ाज़ करते हुए) फ़रमाया : आप इस आ़लीशान मकान पर कितनी रक़म ख़र्च करने का इरादा रखते हैं ? नौ जवान ने अ़र्ज़ की : **एक** लाख दिरहम। **ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने फ़रमाया : अगर येह रक़म आप मुझे दे दें तो मैं आप के लिये एक ऐसे **आ़लीशान महल** की ज़मानत लेता हूं, जो इस से ज़ियादा ख़ूब सूरत और पाएदार है। उस की मिट्टी मुश्क व ज़ा'फ़रान की होगी, वोह कभी मुन्हदिम न होगा और सिर्फ़ महल ही नहीं बल्कि उस के साथ ख़ादिम, ख़ादिमाएं और सुर्ख़ याक़ूत के क़ुब्बे, निहायत शानदार और ह़सीन ख़ैमे वग़ैरा भी होंगे और उस **महल**

को मे'मारों ने नहीं बनाया बल्कि वोह सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला के **कुन** (या'नी हो जा) कहने से बना है । **नौ जवान** ने जवाबन अ़र्ज़ की : मुझे इस बारे में एक शब ग़ौर करने की मोहलत इ़नायत फ़रमाइये । **ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने फ़रमाया : बहुत बेहतर ।

इस मुका-लमे के बा'द येह ह़ज़रात वहां से चले आए, **ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار को रात में बार बार उस नौ जवान का ख़याल आता रहा और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस के ह़क़ में **दुआए ख़ैर** फ़रमाते रहे । सुब्ह़ के वक़्त फिर उस जानिब तशरीफ़ ले गए तो **नौ जवान** को अपने दरवाज़े पर मुन्तज़िर पाया । **नौ जवान** ने बड़े पुर तपाक त़रीक़े से इस्तिक़्बाल करते हुए आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में अ़र्ज़ की : क्या आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को कल की बात याद है ? **ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने इर्शाद फ़रमाया : क्यूं नहीं ! तो **नौ जवान** एक लाख दराहिम की थैलियां **ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار के ह़वाले करते हुए अ़र्ज़ गुज़ार हुवा कि येह रही मेरी पूंजी और येह ह़ाज़िर हैं क़लम, दवात और काग़ज़ ।

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने काग़ज़ और क़लम हाथ में ले कर इस मज़्मून का **बैअ़ नामा** तह़रीर फ़रमाया : "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم" येह तह़रीर इस ग़रज़ के लिये है कि (ह़ज़रते सय्यिदुना) मालिक बिन दीनार (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار) फ़ुलां बिन फ़ुलां के लिये इस के दुन्यवी मकान के इ़वज़ **अल्लाह** तआ़ला से एक ऐसे ही **शानदार**

महल दिलाने का ज़ामिन है और अगर इस **महल** में मज़ीद कुछ और भी हो तो **अल्लाह** तआ़ला का फ़ज़्ल है। इस एक लाख दिरहम के बदले में मैं ने **एक जन्नती महल** का सौदा फुलां बिन फुलां के लिये कर लिया है, जो इस के दुन्यवी मकान से ज़ियादा वसीअ़ और शानदार है और वोह जन्नती महल क़ुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ के साए में है।''

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने **बैअ़ नामा** नौ जवान के ह़वाले कर के एक लाख दराहिम शाम से पहले पहले फ़ु-क़रा व मसाकीन में तक़्सीम फ़रमा दिये। इस अ़ज़ीम अ़ह्द नामे को लिखे हुए अभी 40 रोज़ भी न गुज़रे थे कि नमाज़े फ़ज्र के बा'द मस्जिद से निकलते हुए **ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار की निगाह मेह़राबे मस्जिद पर पड़ी, क्या देखते हैं कि उस नौ जवान के लिये लिखा हुवा वोही काग़ज़ वहां रखा है और उस की पुश्त पर बिग़ैर सियाही (lnk) के येह तह़रीर चमक रही थी : **''अल्लाहु अ़ज़ीज़ुन ह़कीम عَزَّوَجَلَّ की जानिब से मालिक बिन दीनार के लिये परवानए बराअत है कि तुम ने जिस महल के लिये हमारे नाम से ज़मानत ली थी वोह हम ने उस नौ जवान को अ़ता फ़रमा दिया बल्कि इस से 70 गुना ज़ियादा नवाज़ा।''**

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار इस तह़रीर को ले कर ब उ़जलत (या'नी जल्दी से) नौ जवान के मकान पर तश्रीफ़ ले गए, वहां से आहो फ़ुग़ां का शोर बुलन्द हो रहा था। पूछने पर बताया गया कि वोह **नौ जवान** कल फ़ौत हो गया है। **ग़स्साल** ने बयान दिया कि उस नौ जवान ने मुझे अपने पास बुलाया और **वसिय्यत** की, कि

मेरी मय्यित को तुम ग़ुस्ल देना और एक काग़ज़ मुझे कफ़न के अन्दर रखने की वसिय्यत की । चुनान्चे ह़स्बे वसिय्यत उस की तदफ़ीन की गई । **ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने मेह़राबे मस्जिद से मिला हुवा काग़ज़ ग़स्साल को दिखाया तो वोह बे इख़्तियार पुकार उठा : وَاللّٰهِ الْعَظِيْم येह तो वोही काग़ज़ है जो मैं ने कफ़न में रखा था । येह माजरा देख कर एक शख़्स ने **ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار की ख़िदमत में **2 लाख दिरहम** के इ़वज़ ज़मानत नामा लिखने की इल्तिजा की तो फ़रमाया : "जो होना था वोह हो चुका, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ जो चाहता है करता है ।" **ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار उस मर्ह़ूम **नौ जवान** को याद कर के अश्कबारी फ़रमाते रहे ।" (روضُ الرّیاحین، ص ۵۸_۵۹ دارالکتب العلمیۃ بیروت) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

जिस को ख़ुदाए पाक ने दी ख़ुश नसीब है
कितनी अ़ज़ीम चीज़ है दौलत यक़ीन की

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शाने औलिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़सन बसरी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی के ह़म-अ़स्र थे । आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि परवर दगार جَلَّ جَلَالُهٗ ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को कितना इख़्तियार अ़त़ा फ़रमाया कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दुन्यवी मकान के इ़वज़ **जन्नती महल का सौदा** फ़रमा

लिया। वाक़ेई **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ के वलियों की बहुत बड़ी शान होती है। शाने औलिया समझने के लिये येह ह़दीसे पाक मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे **सय्यिदुल अम्बिया-इ वल मुर-सलीन, रा-ह़तुल आ़शिक़ीन, जनाबे सादिक़ो अमीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "थोड़ा सा रिया भी शिर्क है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली से दुश्मनी करे वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से लड़ाई करता है, **अल्लाह** तआ़ला नेकों, परहेज़ गारों, छुपे हुओं को दोस्त रखता है कि ग़ाइब हों तो ढूंडे न जाएं, ह़ाज़िर हों तो बुलाए न जाएं और उन को नज़्दीक न किया जाए, उन के दिल हिदायत के चराग़ हों, हर तारीक गर्द आलूद से निकलें।"

(مِشْكَاةُ الْمَصَابِيح ج۲، ص۲۶۹، حديث۵۳۲۸، دارالكتب العلمية بيروت)

हर नेक बन्दे का एह़तिराम कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में मक़्बूलिय्यत का मे'यार शोहरत व नाम-वरी हरगिज़ नहीं बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तो मुख़्लिस बन्दे ही मक़्बूल होते हैं अगर्चे दुन्या में उन्हें कोई अपने पास खड़ा न होने दे, गुम हो जाएं तो कोई ढूंडने वाला न हो, वफ़ात पा जाएं तो कोई रोने वाला न हो, किसी मह़फ़िल में तशरीफ़ लाएं तो कोई भाव पूछने वाला न हो। बहर ह़ाल हमें हर पाबन्दे शरीअ़त मुसल्मान का अ-दबो एह़तिराम करना चाहिये और अगर अदब बजा नहीं ला सकते तो कम अज़ कम उस की बे अ-दबी से तो बचना ही चाहिये क्यूं कि बा'ज़ लोग **गुदड़ी के ला'ल** (या'नी छुपे हुए बुज़ुर्ग) होते हैं और हमें पता नहीं चलता और बसा अवक़ात उन की बे अ-दबी आदमी को बरबादी के अ़मीक़ गढ़े में गिरा देती है चुनान्चे :

गुस्ताख़ का इ़ब्रतनाक अन्जाम

मन्क़ूल है : बारिश थम चुकी थी, मौसिम ठंडा हो चुका था, ख़ुनुक हवा के झोंके चल रहे थे, फटे पुराने लिबास में मल्बूस एक **दीवाना** टूटे हुए जूते पहने बाज़ार से गुज़र रहा था। एक ह़ल्वाई की दुकान के क़रीब से जब गुज़रा तो उस ने बड़ी अ़क़ीदत से **दूध का एक गर्म गर्म पियाला** पेश किया। उस ने बैठ कर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم कहते हुए पी लिया और (عَزَّوَجَلَّ)اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहता हुवा आगे चल पड़ा। एक त़वाइफ़ अपने यार के साथ अपने मकान के बाहर बैठी थी, बारिश की वज्ह से गलियों में कीचड़ हो गया था, बे ख़याली में उस **दीवाने** का पाउं कीचड़ में पड़ा जिस से कीचड़ उड़ा और त़वाइफ़ के कपड़ों पर पड़ा, उस के यारे बद अत्वार को ग़ुस्सा आया, उस ने दीवाने को थप्पड़ रसीद कर दिया। दीवाने ने मार खा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते हुए कहा : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू भी बड़ा बे नियाज़ है, कहीं दूध पिलाता है तो कहीं थप्पड़ नसीब होता है, अच्छा ! हम तो तेरी रिज़ा पर राज़ी हैं।" येह कह कर **दीवाना** आगे चल दिया। कुछ ही देर बा'द त़वाइफ़ का यार मकान की छत पर चढ़ा, उस का पाउं फिसला, सर के बल ज़मीन पर गिरा और मर गया। **फिर जब** दोबारा उस **दीवाने** का उसी मक़ाम से गुज़र हुवा, किसी शख़्स ने **दीवाने** से कहा : आप ने उस शख़्स को बद दुआ़ दी जिस से वोह गिर कर मर गया। **दीवाने ने कहा :** "ख़ुदा की क़सम ! मैं ने कोई बद दुआ़ नहीं दी।" उस शख़्स ने कहा : फिर वोह शख़्स गिर कर क्यूं मरा ? **दीवाने** ने जवाब दिया : "बात येह है कि अन्जाने में मेरे पाउं से त़वाइफ़ के कपड़ों पर कीचड़ पड़ा तो उस के यार को ना गवार गुज़रा और उस ने मुझे थप्पड़ रसीद किया, जब उस ने मुझे थप्पड़ मारा तो मेरे परवर

दगार جَلَّ جَلَالُهٗ को ना गवार गुज़रा और उस बे नियाज़ عَزَّوَجَلَّ ने उसे मकान से नीचे फेंक दिया।"

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

औलियाउल्लाह के नज़्दीक दुन्या की कोई हैसिय्यत नहीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "जन्नती महल का सौदा" वाली **हिकायत** से जहां **शाने औलिया** का इज़्हार है वहीं इन की दुन्या से बे रग़बती और इन के इस्लाहे उम्मत के अ़ज़ीम और मुक़द्दस जज़्बे का भी ज़ुहूर है। येह हज़राते क़ुदसिय्या लोगों की दीन से दूरी और दुन्या की मश्ग़ूली की वज्ह से ख़ूब कुढ़ते थे। यक़ीनन इन की नज़र में दुन्या की कोई वक़्अ़त ही न थी और मज़म्मते दुन्या की अह़ादीसे मुबा-रका इन के पेशे नज़र रहा करती थीं। इस ज़िम्न में,

"हुब्बे दुन्या से तू बचा या रब" के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से दुन्या के बारे में 17 अह़ादीसे मुबा-रका समाअ़त फ़रमाइये :

﴾1﴿ परिन्दों की रोज़ी

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम, मह़बूबे रब्बे अ़ज़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि अगर तुम **अल्लाह** तआ़ला पर ऐसा तवक्कुल करो जैसा कि उस पर तवक्कुल करने का ह़क़ है तो तुम को ऐसे रिज़्क़ दे जैसे परिन्दों को देता है कि वोह (परिन्दे) सुब्ह़ को भूके जाते हैं और शाम को शिकम सैर लौटते हैं।

(سُنَنُ التِّرْمِذِیّ ج ۴ ص ۱۵۴ حدیث ۲۳۵۱ دارالفکر بیروت)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ह़क़्क़े तवक्कुल येह है कि फ़ाइले ह़क़ीक़ी **अल्लाह** तआ़ला को ही जाने। बा'ज़ ने फ़रमाया कि कस्ब करना नतीजा **अल्लाह** पर छोड़ना, ह़क़्क़े तवक्कुल है। जिस्म को काम में लगाए दिल को **अल्लाह** से वाबस्ता रखे। तजरिबा भी है कि **अल्लाह** तआ़ला पर तवक्कुल करने वाले भूके नहीं मरते। किसी ने क्या ख़ूब कहा :

रिज़्क़ न रखखे साथ में पन्छी और दरवेश जिन का रब पर आसरा उन को रिज़्क़ हमेश

ख़याल रहे कि परिन्दे तलाशे रिज़्क़ के लिये आशियाने से बाहर ज़रूर जाते हैं। हां दरख़्तों में चलने की त़ाक़त नहीं तो उन्हें वहां ही खड़े खड़े खाद, पानी पहुंचता है। कव्वे का बच्चा अन्डे से निकलता है तो सफ़ेद होता है उस के मां बाप उस से डर कर भाग जाते हैं **अल्लाह** तआ़ला उस बच्चे के मुंह पर भुन्गे (एक क़िस्म के छोटे से कीड़े) जम्अ़ कर देता है, येह बच्चा उन्हें खा कर बड़ा होता है, जब काला पड़ जाता है, तब मां बाप आते हैं। (मिरआत जि. 7, स. 113, 114, مرقات ج۹ ص۱۵۶، زیر حدیث ۵۲۹۹)

तवक्कुल किसे कहते हैं

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : तवक्कुल तर्के अस्बाब का नाम नहीं बल्कि ए'तिमाद अ़लल अस्बाब का तर्क है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 379) या'नी अस्बाब ही छोड़ देना तवक्कुल नहीं है तवक्कुल तो येह है कि अस्बाब पर भरोसा न करे।

﴾2﴿ दुन्या और इस की सब चीज़ों से बेहतर

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जन्नत में एक कोड़े (या'नी चाबुक) जितनी जगह दुन्या और उस की चीज़ों से बेहतर है।" (صَحِیحُ البُخارِیّ ج۲ص۳۹۲حدیث:۳۲۵۰ دارالکتب العلمیۃ بیروت) शैखे़ मुह़क़्क़िक़, मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़, **ख़ा-तमुल मुह़द्दिसीन**, ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़त इर्शाद फ़रमाते हैं : जन्नत की थोड़ी सी जगह दुन्या और उस की चीज़ों से बेहतर है। कोड़े या'नी चाबुक का ज़िक्र इस आ़दत के मुत़ाबिक़ है कि सुवार जब किसी जगह उतरना चाहता है तो अपना चाबुक फेंक देता है ताकि इस की निशानी रहे और दूसरा कोई शख़्स वहां न उतरे।

(اشعۃ اللمعات ج٤ ص ٤٣٣ کوئٹہ)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : कोड़े (या'नी चाबुक) से मुराद है वहां की थोड़ी सी जगह। वाक़ेई जन्नत की ने'मतें दाइमी हैं, दुन्या की फ़ानी। फिर दुन्या की ने'मतें तकालीफ़ से मख़्लूत़ (या'नी मिली हुई), (और) वहां की ने'मतें ख़ालिस। फिर दुन्या की ने'मतें अदना वोह आ'ला, इस लिये दुन्या को वहां की अदना जगह से कोई निस्बत ही नहीं।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 447, ज़ियाउल क़ुरआन)

﴾3﴿ दुन्या के लिये माल जम्अ़ करने वाले बे अ़क़्ल हैं

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा, त़य्यिबा, त़ाहिरा, आ़बिदा, ज़ाहिदा, अ़फ़ीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़्तशम, सरापा जूदो करम, ताजदारे ह़रम, शहन्शाहे इरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

"दुन्या उस का घर है जिस का कोई घर न हो और उस का माल है जिस का कोई माल न हो और इस के लिये वोह जम्अ़ करता है जिस में अ़क़्ल न हो।"

(مِشْکَاۃُ الْمَصَابِیح ج۲، ص۲۵۰، حدیث ۵۲۱۱، دارالکتب العلمیة بیروت)

﴿4﴾ दुन्या में मुसाफ़िर बन कर रहो

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि **हुज़ूरे** पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे कन्धे पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया : "दुन्या में एक अजनबी और मुसाफ़िर बन कर रहो।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "जब तू शाम करे तो आने वाली सुब्ह़ का इन्तिज़ार मत कर और जब सुब्ह़ करे तो शाम का मुन्तज़िर न रह और ह़ालते सिह़्ह़त में बीमारी के लिये और ज़िन्दगी में मौत के लिये तय्यारी कर ले।"

(صَحِیحُ الْبُخَارِی، ج۴، ص۲۲۳، حدیث:۶۴۱۶)

﴿5﴾ दुश्मनों का रो'ब जाता रहेगा

ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मक्के मदीने के सुल्त़ान, रसूले ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क़रीब है कि उम्मतें तुम पर एक दूसरे को ऐसी दा'वत दें जैसे खाने वाले अपने पियाले की त़रफ़। तो कोई कहने वाला बोला : क्या उस दिन हमारी कमी की वज्ह से ऐसा होगा ? फ़रमाया : "बल्कि तुम उस दिन बहुत ज़ियादा होगे लेकिन तुम सैलाब के मैल की त़रह़ एक सील बन जाओगे (तुम सैलाब के पानी पर ख़शो ख़ाशाक की त़रह़ बह जाओगे या'नी तुम्हारे अन्दर जुरअत व शुजाअ़त और क़ुव्वत ख़त्म हो जाएगी (اشعہ)) और **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे दुश्मन के दिलों से तुम्हारी हैबत निकाल देगा और

तुम्हारे दिल में सुस्ती और ज़ो'फ़ (कमज़ोरी) डाल देगा।" किसी कहने वाले ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! "वहन" क्या चीज़ है ? फ़रमाया : "दुन्या की महब्बत और मौत से डर।"

(سُنَنِ ابو داوٗد، ج٤ ص ١٥٠، حدیث ٤٢٩٧)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : या'नी कुफ़्फ़ार की क़ौमें यहूद, नसारा, मुश्रिकीन, मजूसी वग़ैरा तुम को मिटाने के लिये मुत्तफ़िक़ हो जावें बल्कि एक दूसरे को दा'वत दें कि आओ मुसल्मानों को मिटाते इन्हें सताते हैं तुम भी हमारे साथ शरीक हो जाओ। येह ह़ालात अब शुरूअ़ हो चुके हैं देखो यहूदी और ईसाई एक दूसरे के दुश्मन हैं मगर आज मुसल्मानों को मिटाने के लिये दोनों बल्कि उन के साथ मुश्रिकीन भी एक हो गए हैं। येह है इस फ़रमाने आ़ली का ज़ुहूर ! हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का एक एक लफ़्ज़ ह़क़ है। या'नी हमारे मुक़ाबले में जो कुफ़्फ़ार के ह़ौसले इतने बुलन्द हो जावेंगे क्या इस की वज्ह येह होगी कि इस ज़माने में हमारी ता'दाद थोड़ी हो गई होगी ! (नहीं बल्कि) आज हमारी ता'दाद ज़ियादा ही है, इस से कुफ़्फ़ार पर हमारी धाक बैठी है। या'नी मुक़ा-ब-लतन आज तुम्हारी ता'दाद इस दिन से ज़ियादा होगी मगर तुम ऐसे होगे जैसे समुन्दर में पानी का मैल, दिखावा ज़ियादा की ह़क़ीक़त कुछ नहीं ! बुज़दिली, ना इत्तिफ़ाक़ी, परेशानिये दिल, आराम त़-लबी, अ़क़्ल की कमी, मौत से डर, दुन्या से महब्बत तुम में बहुत हो जावेंगी। (مرقات ج٩ ص٢٣٢، زیر حدیث ٥٣٦٩) इन वुजूह से कुफ़्फ़ार के दिल से तुम्हारी हैबत निकाल दी जावेगी। **वहन** ब मा'नी सुस्ती, ज़ो'फ़, कमज़ोरी, मशक़्क़त, यहां या ब मा'ना सुस्ती है या ब मा'ना ज़ो'फ़। रब तआ़ला फ़रमाता

है : حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** उस की मां ने उसे पेट में रखा कमज़ोरी पर कमज़ोरी झेलती हुई। پ٢١ لقمان ١٤) और फ़रमाता है : رَبِّ اِنِّیْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّیْ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मेरे रब मेरी हड्डी कमज़ोर हो गई। پ١٦ مریم ٤)। या'नी तुम दिल के कमज़ोर व सुस्त हो जाओगे जिहाद से दिल चुराओगे। या'नी इस सुस्ती व ज़ो'फ़ (कमज़ोरी) का सबब दो चीज़ें हैं, एक दुन्या में रग़बत दूसरे[2] मौत का ख़ौफ़। जिस क़ौम में येह दो चीज़ें जम्अ़ हो जावें वोह इ़ज़्ज़त की ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकती। ख़याल रहे कि हुब्बे दुन्या और मौत से नफ़रत लाज़िम मल्ज़ूम चीज़ें हैं। (मिरआत, जि. 7, स.173, 174)

﴾6﴿ दुन्या की महब्बत गुनाहों का सर है

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه रिवायत करते हैं कि मैं ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने ख़ुत्बे में फ़रमाते सुना : "शराब गुनाहों की जामेअ़ है, औ़रतें शैत़ान की रस्सियां हैं और **दुन्या की महब्बत तमाम गुनाहों का सर है।**" (مِشْكَاةُ الْمَصَابِيح، ج٢، ص٢٥٠، ٥٢١٢)

﴾7﴿ आख़िरत के मुक़ाबले में दुन्या की ह़ैसिय्यत

हज़रते सय्यिदुना **मुस्तवरिद** बिन शद्दाद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि **अल्लाह** के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आख़िरत के मुक़ाबले में दुन्या इतनी सी है जैसे कोई अपनी इस उंगली को समुन्दर में डाले तो वोह देखे कि इस उंगली पर कितना पानी आया।"

(صَحِيح مُسلِم، ص١٥٢٩، حديث٢٨٥٨ دار ابن حزم بيروت)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : येह भी फ़क़त समझाने के लिये है, वरना फ़ानी और मु-तनाही (या'नी इन्तिहा को पहुंचने वाले) को बाक़ी ग़ैर फ़ानी ग़ैर मु-तनाही से (इतनी) वज्ह निस्बत भी नहीं जो (कि) भीगी उंगली की तरी को समुन्दर से है। ख़याल रहे कि दुन्या वोह है जो **अल्लाह** से ग़ाफ़िल कर दे, आ़क़िल आ़रिफ़ की दुन्या तो आख़िरत की खेती है, उस की दुन्या बहुत ही अ़ज़ीम है, ग़ाफ़िल की नमाज़ भी दुन्या है, जो (कि) वोह नामो नुमूद के लिये अदा करता है, आ़क़िल का खाना, पीना, सोना, जागना बल्कि जीना मरना भी दीन है कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की **सुन्नत** है, मुसल्मान इस लिये खाए, पिये, सोए, जागे कि येह हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की **सुन्नतें** हैं। ह़यातुदुन्या और चीज़ है, **ह़यातुन फ़िदुन्या** और, **ह़यातुल्लिदुन्या** कुछ और, **या'नी** दुन्या की ज़िन्दगी, दुन्या में ज़िन्दगी, दुन्या के लिये ज़िन्दगी। जो ज़िन्दगी दुन्या में हो मगर आख़िरत के लिये हो दुन्या के लिये न हो, वोह मुबारक है। मौलाना फ़रमाते हैं, शे'र :

آب در کشتی ہلاکِ کشتی است　　آب اندر زیرِ کشتی پشتی است

(कश्ती दरिया में रहे तो नजात है, और अगर दरिया कश्ती में आ जावे तो हलाक है)　　(मिरआत, जि.7, स. 3)

﴾8﴿ भेड़ का मरा हुवा बच्चा

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि **रह़मते आलम,** नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़तशम

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भेड़ के मुर्दा बच्चे के पास से गुज़रे इर्शाद फ़रमाया : "तुम में से कोई येह पसन्द करेगा कि येह उसे एक दिरहम के इ़वज़ मिले ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : हम नहीं चाहते कि येह हमें किसी भी चीज़ के इ़वज़ (बदले) मिले। तो इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! दुन्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां इस से भी ज़ियादा ज़लील है जैसे येह तुम्हारे नज़्दीक।"

(مِشْكَاةُ الْمَصَابِيح ج٢، ص٢٤٢، حديث ٥١٥٧)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : या'नी बकरी का मुर्दार बच्चा कोई चार आने में भी नहीं ख़रीदता, कि उस की खाल बेकार और गोश्त वग़ैरा ह़राम है, उसे कौन ख़रीदे ! दुन्या के मा'ना अभी अ़र्ज़ कर दिये गए वोह याद रखे जावें। सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं कि **दुन्यादार को तमाम जहान के मुर्शिद हिदायत नहीं दे सकते, तारिकुद्दुन्या दीनदार को सारे शयात़ीन मिल कर गुमराह नहीं कर सकते, दुन्यादार दीनी काम भी करता है तो दुन्या के लिये, और दीनदार दुन्यावी काम भी करता है तो दीन के लिये।** (मिरआत, जि. 7, स. 3)

﴾9﴿ दुन्या मच्छर के पर से भी ज़लील है

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه रिवायत करते हैं कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है : "अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक दुन्या की ह़ैसिय्यत मच्छर के पर के बराबर भी होती तो वोह इस दुन्या से किसी काफ़िर को पानी का एक घूंट भी पीने को न देता।"

(سُنَنُ التِّرْمِذِی، ج ٤، ص ١٤٣ حديث ٢٣٢٧)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

﴾10﴿ इबादत से दूरी का वबाल

ह़ज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "तुम्हारा पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "ऐ इब्ने आदम ! तू ख़ुद को मेरी इबादत के लिये फ़ारिग़ कर ले मैं तेरे दिल को ग़ना से और तेरे हाथों को रिज़्क़ से भर दूंगा और ऐ इब्ने आदम ! तू मेरी इबादत से दूरी इख़्तियार न कर (वरना) मैं तेरे दिल को फ़क़्र से भर दूंगा और तेरे हाथों को दुन्यावी कामों में मसरूफ़ कर दूंगा।"

(اَلْمُسْتَدْرَک لِلْحَاکِم، ج٥، ص ٤٦٤، حدیث ٧٩٩٦، دارالمعرفة بیروت)

﴾11﴿ दुन्या कि मह़ब्बत बाइसे नुक़्साने आख़िरत है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूले हाशिमी, मक्की म-दनी, मुह़म्मदे अ़-रबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस ने दुन्या से मह़ब्बत की वोह अपनी आख़िरत को नुक़्सान पहुंचाता है और जिस ने आख़िरत से मह़ब्बत की वोह अपनी दुन्या को नुक़्सान पहुंचाता है, तो तुम बाक़ी रहने वाली (आख़िरत) को फ़ना होने वाली (दुन्या) पर तरजीह़ दो।"

(اَلْمُسْتَدرَک لِلْحَاکِم ج٥، ص٤٥٤، حدیث٧٩٦٧)

﴾12﴿ एक दिन की ख़ूराक हो तो.....

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन **मिह़सन ख़त्मी** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि साह़िबे जूदो सख़ा, अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "तुम में जिस ने इस ह़ाल में

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

सुब्ह की, कि उस का दिल मुत़्मइन, बदन तन्दुरुस्त और उस के पास **एक दिन की ख़ूराक हो तो** गोया उस के लिये दुन्या जम्अ़ कर दी गई है।"

(سُنَنُ التِّرمِذِیّ،ج٤،ص١٥٤،حدیث٢٣٥٣)

﴾13﴿ दुन्या मल्ऊन है

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "होशियार रहो दुन्या ला'नती चीज़ है और जो दुन्या में है वोह भी ला'नती है सिवाए **अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्र के और उस के जो **रब** عَزَّوَجَلَّ के क़रीब कर दे और आ़लिम के और त़ालिबे इल्म के।"

(سُنَنُ التِّرمِذِیّ،ج٤،ص١٤٤،حدیث٢٣٢٩)

﴾14﴿ अल्लाह बन्दे को दुन्या से परहेज़ कराता है

हज़रते सय्यिदुना महमूद बिन लबीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि त़यबा के शम्सुद्दुहा, का'बे के बदरुद्दुजा, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे को दुन्या से इस त़रह परहेज़ कराता है जिस त़रह तुम अपने मरीज़ को खाने और पीने की चीज़ों से परहेज़ कराते हो।"

(شُعَبُ الْاِیمان، ج٧،ص٣٢١،حدیث١٠٤٥٠ دارالکتب العلمیة بیروت)

﴾15﴿ दौलत का बन्दा ला'नती है

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, शफ़ीए रोज़े क़ियामत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "ला'नती है दिरहमो दीनार का बन्दा।" (سُنَنُ التِّرمِذِی، ج ٤ ص ١٦٦ حدیث٢٣٨٢)

﴾16﴿ हुब्बे मालो जाह की तबाहकारी

ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं कि सरकारे मदीनए मुनव्वरह सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "दो[2] भूके भेड़िये जिन्हें बकरियों में छोड़ दिया जाए वोह इतना नुक़्सान नहीं पहुंचाते जितना कि माल और इ़ज़्ज़त की लालच इन्सान के दीन को नुक़्सान पहुंचाती है।" (سُنَنُ التِّرْمِذِی، ج ٤ ص ١٦٦ حدیث ٢٣٨٣)

﴾17﴿ दुन्या मोमिन के लिये क़ैदख़ाना है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**दुन्या मोमिन के लिये क़ैदख़ाना और काफ़िर के लिये जन्नत है।**" (صَحِیح مُسلِم ص ١٥٨٢ حدیث ٢٩٥٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इन्फ़िरादी कोशिश करना सुन्नत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار की **ह़िकायत** में आप ने देखा कि दुन्यवी मकान की ता'मीरात में मश्ग़ूल नौ जवान पर **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने किस त़रह़ उस का म-दनी ज़ेह्न बनाया और उस के साथ **जन्नती महल का सौदा** फ़रमाया। यक़ीनन नेकी की दा'वत के काम में **इन्फ़िरादी कोशिश** को बड़ा अ़मल दख़्ल है ह़त्ता कि हमारे मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नीज़ सब के सब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने **नेकी की दा'वत** के काम में **इन्फ़िरादी कोशिश** फ़रमाई है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

इन्फ़िरादी कोशिश की अहम्मिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी का तक़रीबन **99%** (निनान्वे फ़ीसद) म-दनी काम **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए ही मुम्किन है, अक्सर **इन्फ़िरादी कोशिश**(1), **इज्तिमाई कोशिश**(2) से कहीं बढ़ कर मुअस्सिर साबित होती है क्यूं कि बारहा देखा जाता है कि वोह इस्लामी भाई जो सालहा साल से सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल कर रहा होता है, और दौराने बयान मुख़्तलिफ़ तरग़ीबात म-सलन पंज वक़्ता बा जमाअ़त नमाज़, **र-मज़ानुल मुबारक** के रोज़े, इ़मामा शरीफ़, दाढ़ी मुबारक, ज़ुल्फ़ों, सफ़ेद म-दनी लिबास, रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर करने, म-दनी तरबियती कोर्स (**63** दिन), म-दनी क़ाफ़िला कोर्स (**41** दिन), यक-मुश्त **12** माह, **30**, **12** या **3** दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र वग़ैरा का सुन कर अ़-मली जामा पहनाने की निय्यतें भी कर लेता है मगर अ़-मली क़दम उठाने में नाकाम रहता है लेकिन जब कोई मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने उस से मह़ब्बत के साथ मुलाक़ात कर के **इन्फ़िरादी कोशिश** की और नरमी व शफ़्क़त, तदबीर व ह़िक्मत से इन उमूर की तरग़ीब दिलाता है तो बसा अवक़ात वोह इन का आ़मिल बनता चला जाता है। गोया **इज्तिमाई कोशिश** के ज़रीए लोहा गर्म किया जाता और **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए उस पर म-दनी चोट लगा कर उसे म-दनी सांचे में ढाला जाता है।

---

(1) एक को अलग से नेकी की दा'वत देने (या'नी उसे समझाने) को "**इन्फ़िरादी कोशिश**" कहते हैं। (2) सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में बयान के ज़रीए, मस्जिद दर्स, चौक दर्स वग़ैरा के ज़रीए मुसल्मानों तक नेकी की दा'वत पहुंचाने (या'नी उन्हें समझाने) को "**इज्तिमाई कोशिश**" कहते हैं।

याद रखिये ! इज्तिमाई कोशिश के मुक़ाबले में **इन्फ़िरादी कोशिश** बेह़द आसान है क्यूं कि कसीर इस्लामी भाइयों के सामने "बयान" करने की सलाहिय्यत हर एक में नहीं होती जब कि **इन्फ़िरादी कोशिश** हर एक कर सकता है ख़्वाह उसे बयान करना न भी आता हो। **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए ख़ूब ख़ूब नेकी की दा'वत देते जाइये और सवाब का ख़ज़ाना लूटे जाइये।

नेकी की दा'वत का सवाब

पारह 24 **सूरए حٰمٓ السَّجدہ**, आयत 33 में इर्शाद होता है :

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَ عَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۳۳﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और इस से ज़ियादा किस की बात अच्छी जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ बुलाए और नेकी करे और कहे मैं मुसल्मान हूं।

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शहन्शाहे उमम, मह़बूबे रब्बे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे ज़रीए किसी एक को भी हिदायत दे दे तो येह तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर है।"

(صَحِيح مُسلِم ص ۱۳۱۱ حدیث ۲۴۰۶ دار ابن حزم بیروت)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रह़मते कौनेन, दुखिया दिलों के चैन, रसूलुस्स-क़लैन, नानाए ह़-सनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "नेकी की त़रफ़ रहनुमाई करने वाला भी नेकी करने वाले की त़रह़ है।" (سُنَنُ التِّرْمِذِی، ج ٤، ص ٣٠٥، حدیث ٢٦٧٩)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **रसूले अकरम,** नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने हिदायत व भलाई की दा'वत दी तो उसे इस भलाई की पैरवी करने वालों के बराबर सवाब मिलेगा और उन (भलाई की पैरवी करने वालों) के अज्र में (भी) कोई कमी वाक़ेअ़ न होगी और जिस ने किसी को गुमराही की दा'वत दी उसे इस गुमराही की पैरवी करने वालों के बराबर गुनाह होगा और उन (गुमराही की पैरवी करने वालों) के गुनाहों में (भी) कमी न होगी।" (صحیح مسلم، ص ۱۴۳۸ ، حدیث ۲۶۷۴)

हर कलिमे के बदले एक साल की इबादत का सवाब

एक बार हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जो अपने भाई को नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके उस की जज़ा क्या है ? **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : मैं उस के हर हर कलिमे के बदले **एक एक साल की इबादत का सवाब** लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है। (مُکَاشَفَۃُ الْقُلُوْب ص ۴۸ دارالکتب العلمیۃ بیروت)

दूं सब को नेकी की दा'वत आक़ा — मुझे तुम ऐसी दो हिम्मत आक़ा
नबिय्ये रह़मत शफ़ीए़ उम्मत — बना दो मुझ को भी नेक ख़स्लत

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इन्फ़िरादी कोशिश के 2 यादगार वाक़िआ़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर

ग़ैर सियासी तहरीक "**दा'वते इस्लामी**" की तरक़्क़ी में इन्फ़िरादी कोशिश का बहुत बड़ा हिस्सा है। यादगार वाक़िआ

(1) दा'वते इस्लामी के अवाइल (या'नी शुरूअ़ के दिनों) में एक एक फ़र्द पर इन्फ़िरादी कोशिश करने के लिये मैं (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ) उस के घर, दफ़्तर और दुकान तक बसा अवक़ात तन्हा जाता। दा'वते इस्लामी बने अभी ज़ियादा अ़र्सा न गुज़रा था और उन दिनों मैं नूर मस्जिद काग़ज़ी बाज़ार, बाबुल मदीना में इमामत किया करता था, एक नौ जवान जो कि दाढ़ी मुन्डा (Shaved) था, किसी ग़लत़ फ़ह्मी की बिना पर बेचारा मुझ से नाराज़ हो गया यहां तक कि उस ने मेरे पीछे नमाज़ पढ़ना भी छोड़ दी। एक बार मैं कहीं से गुज़र रहा था हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से वोही शख़्स अपने दोस्त समेत मेरे सामने आ गया, मैं ने सलाम में पहल करते हुए اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم कहा तो उस ने नाराज़ी के अन्दाज़ में मुंह नीचे कर लिया और सलाम का जवाब तक न दिया, मैं ने उस का नाम ले कर येह कहते हुए कि आप तो बहुत नाराज़ हैं उस को अपने साथ चिमटा लिया। उस से वोह ज़रा खुला और उस के ज़ेह्न में जो वसाविस थे वोह कहने शुरूअ़ कर दिये, मैं ने नरमी के साथ उस के जवाबात अ़र्ज़ किये। फिर वोह दोनों दोस्त वहां से रुख़्सत हो गए। जब दोबारा मज़्कूरा नाराज़ नौ जवान के दोस्त से मेरी मुलाक़ात हुई तो उस ने मुझे बताया कि वोह कह रहा था, "यार! **इल्यास** तो अ़जीब आदमी है कि उस ने मुझे सलाम में पहल की, जब मैं ने नाराज़ हो कर मुंह नीचे कर लिया तो जज़्बात में आ कर मुंह फुला लेने के बजाए उस ने मुझे अपने सीने से लगा लिया और फिर प्यार से ऐसा दबोचा कि मेरे सीने से उस की नफ़रत यक-दम निकल गई और महब्बत दाख़िल हो

गई ! बस अब मुरीद बनूंगा तो इसी का बनूंगा। चुनान्चे اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह पक्का अ़त़्त़ारी हो कर एक दम मुह़िब बन गया और दाढ़ी मुबारक भी अपने चेहरे पर सजा ली।''

है फ़लाह़ो कामरानी नरमी व आसानी में हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में
डूब सकती ही नहीं मौजों की त़ुग़यानी में जिस की कश्ती हो मुह़म्मद की निगह़बानी में

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) यादगार वाक़िआ़

येह उन दिनों की बात है जब मैं शहीद मस्जिद, ख़ारादर, बाबुल मदीना कराची में इमामत की सआ़दत ह़ासिल करता था, और हफ़्ते के अक्सर दिन बाबुल मदीना के मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों की मस्जिदों में जा कर सुन्नतों भरे बयानात कर कर के मुसल्मानों को दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़ करवा रहा था और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुसल्मानों की एक ता'दाद मेरी दा'वत क़बूल कर चुकी थी और दा'वते इस्लामी उठान ले रही थी मगर अभी दा'वते इस्लामी एक कमज़ोर पौदे ही की मिस्ल थी। वाक़िआ़ यूं हुवा कि मूसा लैन, लियारी, बाबुल मदीना में जहां मेरी क़ियाम गाह थी वहां का मेरा एक **पड़ोसी** किसी ना कर्दा ख़त़ा की बिना पर सिर्फ़ व सिर्फ़ ग़लत़ फ़ह्मी के सबब मुझ से सख़्त नाराज़ हो गया और बिफर कर मुझे ढूंडता हुवा **शहीद मस्जिद** पहुंचा। मैं वहां मौजूद न था बल्कि कहीं सुन्नतों भरा बयान करने गया हुवा था, लोगों के बक़ौल उस शख़्स ने मस्जिद में नमाज़ियों के सामने मेरे बारे में सख़्त बर्‌हमी का इज़्हार किया और काफ़ी शोर मचाया और ए'लान किया कि मैं इल्यास क़ादिरी के

(कारनामों) का बोर्ड चढ़ाऊंगा वग़ैरा । मैं ने कोई इन्तिक़ामी कारवाई न की नीज़ हिम्मत भी न हारी और अपने म-दनी कामों से ज़र्रा बराबर पीछे भी न हटा । ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का करना ऐसा हुवा कि चन्द रोज़ के बा'द जब मैं अपने घर की त़रफ़ आ रहा था तो वोही शख़्स चन्द लोगों के हमराह मह़ल्ले में खड़ा था, मेरी कसोटी का वक़्त था, हिम्मत की और उस की त़रफ़ एक दम आगे बढ़ कर मैं ने कहा : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم" इस पर उस ने बा क़ाइदा मुंह फेर लिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं जज़्बात में न आया बल्कि मज़ीद आगे बढ़ कर मैं ने उस को बाहों में लिया और उस का नाम ले कर मह़ब्बत भरे लहजे में कहा : "बहुत नाराज़ हो गए हो !" मेरे येह कहते ही उस का ग़ुस्सा ख़त्म हो गया, बे साख़्ता उस की ज़बान से निकला : ना भई ना ! इल्यास भाई कोई नाराज़ी नहीं ! और फिर..... फिर..... मेरा हाथ पकड़ कर बोला : चलो घर चलते हैं आप को मेरे साथ ठन्डी बोतल पीनी होगी । और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अपने घर ले जा कर उस ने मेरी ख़ैर ख़्वाही की ।

है फ़लाह़ो कामरानी नरमी व आसानी में हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में
डूब सकती ही नहीं मौजों की त़ुग़यानी में जिस की कश्ती हो मुह़म्मद की निगह़बानी में

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुश्मन को दोस्त बनाने का नुस्ख़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह उसूल याद रखिये ! कि **नजासत को नजासत से नहीं पानी से पाक किया जाता है ।** लिहाज़ा अगर कोई आप के साथ नादानी व शिद्दत भरा सुलूक करे तब भी आप

उस के साथ नरमी व मह़ब्बत भरा सुलूक करने की कोशिश फ़रमाइये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस के मुस्बत नताइज देख कर आप का कलेजा ज़रूर ठन्डा होगा। وَاللّٰهِ الْمُجِيْب عَزَّوَجَلَّ वोह लोग बड़े ख़ुश नसीब हैं जो ईंट का जवाब पथ्थर से देने के बजाए ज़ुल्म करने वालों को मुआ़फ़ कर देते और बुराई को भलाई से टालते हैं। बुराई को भलाई से टालने की तरग़ीब के ज़िम्न में पारह 24 सूरए حٰمٓ السَّجْدَه की 34वीं आयते करीमा में इर्शादे क़ुरआनी है :

اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِیْ بَیْنَكَ وَبَیْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِیٌّ حَمِیْمٌ ﴿۳۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ सुनने वाले ! बुराई को भलाई से टाल जभी वोह कि तुझ में और उस में दुश्मनी थी ऐसा हो जाएगा कि गहरा दोस्त।

अपने येह दोनों वाक़िआ़त मैं ने अपने इस्लामी भाइयों की तरग़ीब के लिये अ़र्ज़ किये हैं اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ और भी कई वाक़िआ़त हैं।[1] यक़ीनन सह़ीह़ मा'नों में "**मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी**" वोही है जो "इन्फ़िरादी कोशिश" में माहिर हो।

ड्राइवर पर इन्फ़िरादी कोशिश

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के **मुबल्लिग़ीन इन्फ़िरादी कोशिश** वाली सुन्नत पर अ़मल कर के लोगों के दिलों में इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शम्अ़ रोशन करने में मश्ग़ूल हैं, उन की इन्फ़िरादी

1. अ़क़ीदत मन्दों और मा तह़तों की तरग़ीब के लिये अपने वाक़िआ़त बयान करना बुज़ुर्गों का पुराना त़रीक़ा है। मगर आ़म मुबल्लिग़ का अपने मुंह से अपने इस त़रह़ के वाक़िआ़त बयान करना मुनासिब नहीं। **मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

कोशिशों की ब-र-कतों भरी तह़रीरों का कभी कभी मुझे भी नज़ारा हो ही जाता है, चुनान्चे एक **आ़शिक़े रसूल** ने मुझे तह़रीर दी थी उस का ख़ुलासा अपने अन्दाज़ व अल्फ़ाज़ में अ़र्ज़ करने की कोशिश करता हूं : **''दा'वते इस्लामी** के म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (बाबुल मदीना कराची) में जुम्आ़रात को होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत के लिये मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों से भर कर आई हुई (बे शुमार) मख़्सूस बसें वापसी के इन्तिज़ार में जहां खड़ी होती हैं, वहां से गुज़रा तो क्या देखता हूं कि एक ख़ाली बस में गाने बज रहे हैं और ड्राइवर बैठ कर चरस के कश लगा रहा है, मैं ने जा कर ड्राइवर से महब्बत भरे अन्दाज़ में मुलाक़ात की, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुलाक़ात की ब-रकात फ़ौरन ज़ाहिर हुईं और उस ने ख़ुद ब ख़ुद गाने बन्द कर दिये और चरस वाली सिगरेट भी बुझा दी। मैं ने मुस्कुरा कर सुन्नतों भरे बयान की केसिट **''क़ब्र की पहली रात''** उस को पेश की, उस ने उसी वक़्त टेप रेकॉर्डर में लगा दी, मैं भी साथ ही बैठ कर सुनने लगा कि दूसरों को बयान सुनाने का मुफ़ीद त़रीक़ा येही है कि ख़ुद भी साथ में सुने। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उस ने बहुत अच्छा असर लिया, घबरा कर गुनाहों से तौबा की और बस से निकल कर मेरे साथ इज्तिमाअ़ में आ कर बैठ गया। (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 29)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! इन्फ़िरादी कोशिश से कितना फ़ाएदा होता है लिहाज़ा हर मुसल्मान पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करनी और इन को नमाज़ों की दा'वत देनी चाहिये। इज्तिमाअ़ वग़ैरा के

लिये अगर बस या वेगन में आएं तो ड्राइवर व कन्डक्टर को भी शिर्कत की दर-ख़्वास्त करनी चाहिए। बिलफ़र्ज़ कोई आने के लिये तय्यार नहीं होता तो सुनने की दर-ख़्वास्त कर के उस को बयान की केसिट पेश कर दी जाए और वोह सुन ले तो वापस ले कर दूसरी दी जाए और जहां तक मुम्किन हो बयान की केसिटें दे कर इस के बदले में उन से गानों की केसिटें ले कर उन में बयानात डब करवा कर मज़ीद आगे बढ़ा देनी चाहिएं, इस त़रह़ कुछ न कुछ गुनाहों भरी केसिटों का اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ातिमा होगा। इन्फ़िरादी कोशिश और समझाना तर्क नहीं करना चाहिये। **अल्लाहु** रब्बुल आ़-लमीन جَلَّ جَلَالُهٗ पाराह 27 **सू-रतुज़्ज़ारियात** की आयत नम्बर 55 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है।

काश ! नेकी की दा'वत मैं दूं जा बजा
सुन्नतें आ़म करता रहूं जा बजा
गर सितम हो उसे भी सहूं जा बजा
ऐसी हिम्मत ह़बीबे ख़ुदा दीजिये

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सय्यिदे सादात के 2 इ़ब्रतनाक इर्शादात

जो नादान बिला ज़रूरत अपने मकान व दुकान की ता'मीर व तज़्ईन (या'नी सजावट) में मुन्हमिक रहते हैं, वोह ता'मीरात के मु-तअ़ल्लिक़ सय्यिदे सादात, शाहे मौजूदात, मह़बूबे रब्बे काएनात

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के 2 **इर्शादात** मअ़ तशरीह़ात मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं और इब्रत के **म-दनी फूल** चुनें चुनान्चे

(1) ग़ैर ज़रूरी ता'मीरात की ह़ौसला शिकनी

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, मालिके कौनो मकान, रसूले ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मुसल्मान को हर ख़र्च के इ़वज़ अज्र दिया जाता है सिवाए इस मिट्टी के।" (مشکوٰۃ المصابیح، ج۲، ص۲٤٦، حدیث٥١٨٢)

मुफ़स्सिरे शहीर, **ह़कीमुल उम्मत,** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलहाज, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان इस ह़दीस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : "(अच्छी निय्यत के साथ शरीअ़त के मुत़ाबिक़) खाने पीने, लिबास वग़ैरा पर ख़र्च करने में सवाब मिलता है कि येह चीज़ें इ़बादात का ज़रीआ़ हैं मगर बिला ज़रूरत मकानात बनाने में कोई सवाब नहीं, लिहाज़ा इमारात साज़ी का शौक़ न करो कि इस में वक़्त और माल दोनों की बरबादी है। **ख़याल रहे !** यहां दुन्यवी इमारतें वोह भी बिला ज़रूरत बनाना मुराद हैं । मस्जिद, मद्रसा, ख़ानक़ाह, मुसाफ़िर ख़ाने (अच्छी निय्यत के साथ) बनाना तो इ़बादत है कि येह तो स-दक़ाते जारिय्या हैं। यूं ही (अच्छी निय्यत के साथ) ब क़दरे ज़रूरत मकान बनाना भी सवाब है कि इस में सुकून से रह कर **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत करेगा । बा'ज़ लोग देखे गए हैं कि वोह हमेशा मकान के तोड़ फोड़, हर साल नए नमूने के मकानात बनाने ही में मश्ग़ूल रहते हैं यहां येही मुराद हैं।"

(मिरआत शर्हे़ मिश्कात, जि. 7, स. 19)

(2) फ़ुज़ूल ता'मीर में भलाई नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, शाहे अ़रब, मह़बूबे रब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सारे ख़र्च **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में हैं, सिवाए इ़मारात की ता'मीर के कि इन में भलाई नहीं।"

(سُنَنُ التِّرْمِذِی ج٤ ص٢١٨ حدیث٢٤٩٠)

मुफ़स्सिरे शहीर, **ह़कीमुल उम्मत,** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज़, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان इस ह़दीस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : "दुन्यवी ग़ैर ज़रूरी इ़मारतें बनाते रहना इसराफ़ या'नी फ़ुज़ूल ख़र्ची।" (मिरआत शर्ह़े मिश्कात, जि. 7, स. 20)

शह़द दिखाए ज़ह़र पिलाए क़ातिल डाइन शोहर कुश
इस मुर्दार पे क्या ललचाया दुन्या देखी भाली है

वलियों के सरदार के इ़ब्रतनाक अश्आ़र

पीरों के पीर, रोशन ज़मीर, क़ुत्बे रब्बानी, मह़बूबे सुब्ह़ानी, पीरे लासानी, शहबाज़े ला मकानी, क़िन्दीले नूरानी, ग़ौसे स-मदानी **ह़ज़रते शैख़ अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी** قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی एक शख़्स के क़रीब से गुज़रे जो कि अपने **घर** की मज़बूत इ़मारत ता'मीर कर रहा था येह देख कर ग़ौसुल आ'ज़म दस्त-गीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر ने बरजस्ता येह अ़-रबी अश्आ़र कहे :

أَتَبْنِیْ بِنَاءَ الْخَالِدِیْنَ وَاِنَّمَا مَقَامُکَ فِیْهَا لَوْ عَقَلْتَ قَلِیْلٌ
لَقَدْ کَانَ فِیْ ظِلِّ الْاَرَاکِ کِفَایَةً لِّمَنْ کَانَ یَوْمًا یَّقْتَفِیْهِ رَحِیْلٌ

तरजमा : क्या तुम हमेशा रहने वालों का मकान बना रहे हो अगर तुम्हें समझ हो तो इस में थोड़ी मुद्दत रहोगे, उस शख़्स के लिये पीलू[1] का साया ही काफ़ी होता है कि जिस के पास क़ियाम के लिये फ़क़त एक दिन होता है (दूसरे दिन) इस से कूच कर जाता है। (تَنبِيهُ المُغتَرِّين ص ١١٠)

अल्लाह के वली किसी को मकान बनाता देखते तो.....

हज़रते सय्यिदी अ़ली ख़वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَزَّاق जब किसी दरवेश को मकान बनाते हुए देखते तो उस की मज़म्मत करते और फ़रमाते "तुम इस मकान पर जो कुछ ख़र्च करते हो तो इस से तुम्हें सुकून व इत्मीनान हासिल न होगा।" (ایضاً ص ١١١)

ऊंचे ऊंचे मकान थे जिन के तंग क़ब्रों में आज आन पड़े
आज वोह हैं न हैं मकां बाक़ी नाम को भी नहीं हैं निशां बाक़ी

इ़ब्रतनाक वाक़िआ़

"**मदीनतुल औलिया मुलतान**" का एक नौ जवान धन कमाने की धुन में अपने वत़न, शहर, ख़ानदान वग़ैरा से दूर किसी दूसरे मुल्क में जा बसा। ख़ूब माल कमाता और घर वालों को भिजवाता, इस के और घर वालों के बाहम मश्वरे से **आ़लीशान मकान** (कोठी) बनाने का त़ै पाया। येह नौ जवान सालहा साल तक रक़म भेजता रहा, घर वाले मकान बनवाते और उस को सजाते रहे यहां तक कि उस की तक्मील हुई। येह शख़्स जब वत़न वापस आया तो उस आ़लीशान मकान (कोठी) में

1. एक दरख़्त का नाम जिस की जड़ों और शाख़ों से मिस्वाकें बनाई जाती हैं।

www.dawateislami.net

रिहाइश के लिये तय्यारियां ज़ोरूज पर थीं मगर आह ! मुक़द्दर ! कि उस मकान में मुन्तक़िल होने से तक़रीबन एक हफ़्ता क़ब्ल ही उस का **इन्तिक़ाल** हो गया और वोह अपने आ़लीशान मकान के बजाए क़ब्र में मुन्तक़िल हो गया।

जहां में हैं इ़ब्रत के हर सू नमूने मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तू ने जो आबाद थे वोह मकां अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

सामान 100 बरस का है पल की ख़बर नहीं

आह ! बा'ज़ अवक़ात बन्दा ग़फ़्लत में पड़ा रह जाता है और उस के बारे में कुछ का कुछ तय्यार हो चुका होता है चुनान्चे "**ग़ुन्यतुत्तालिबीन**" में है : "**बहुत** से कफ़न धुल कर तय्यार रखे होते हैं मगर कफ़न पहनने वाले बाज़ारों में घूम फिर रहे होते हैं, **बहुत** से लोग ऐसे होते हैं कि जिन की क़ब्रें खुदी हुई तय्यार होती हैं मगर उन में दफ़्न होने वाले ख़ुशियों में मस्त होते हैं। **बहुत** से लोग हंस रहे होते हैं ह़ालां कि उन की हलाकत का वक़्त क़रीब आ चुका होता है। न जाने कितने ही मकानात की ता'मीरात मुकम्मल होने वाली होती हैं मगर मालिके मकान की मौत का वक़्त भी क़रीब आ चुका होता है।" (غنیۃالطالبین ج۱ ص ۲۵۱)

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं
सामान सो बरस का है पल की ख़बर नहीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कब तक इस दुन्या में ग़फ़्लत के साथ ज़िन्दगी गुज़ारते रहेंगे। **याद रखिये !** इस दुन्या को अचानक छोड़ कर रुख़्सत होना पड़ेगा। लह-लहाते बाग़ात, उ़म्दा उ़म्दा मकानात, ऊंचे ऊंचे महल्लात, मालो दौलत व हीरे जवाहिरात, सोने चांदी के ज़ेवरात और मन्सब व शोहरत व दुन्यवी तअ़ल्लुक़ात हरगिज़ काम न आएंगे, नर्म व नाज़ुक बदन को नर्म नर्म गद्दों से उठा कर बिग़ैर तक्ये ही के क़ब्र के अन्दर फ़र्शे ख़ाक पर डाल दिया जाएगा।

नर्म बिस्तर घर ही पर रह जाएंगे तुम को फ़र्शे ख़ाक पर दफ़्नाएंगे

येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मौत की याद के लिये **3 इ़ब्रतनाक अख़्बारी वाक़िआ़त** मुला-हज़ा फ़रमाइये क्यूं कि एक की मौत दूसरे के लिये नसीह़त होती है चुनान्चे :- **(1)**..... **एक अख़्बारी ख़बर** के मुत़ाबिक़ मर्कज़ुल औलिया की एक **16 सालह** नौ जवान लड़की बेचारी दूध गर्म कर रही थी कि अचानक दोपट्टे को आग ने पकड़ लिया और वोह झुलस कर **लुक़्मए अजल बन गई**। **(2)**..... **एक ख़ातून** चूल्हा फट जाने के बाइ़स **मौत के घाट** उतर गई। **(3)**..... किसी शह़र में किसी सियासी पार्टी का जुलूस जा रहा था, सियासी लीडर को देखने के लिये 2 अफ़राद ट्रेन की छत पर चढ़ गए। आह ! ओवर हेड पुल से उन के सर टकरा गए और देखते ही देखते उन **दोनों ने दम तोड़ दिया**।

लिफ़्ट में क़दम रखा मगर लिफ़्ट न थी और.....

एक इस्लामी भाई ने बताया : बाबुल मदीना की एक इमारत की चौथी मन्ज़िल से नीचे आने के लिये एक औरत लिफ़्ट के इन्तिज़ार में खड़ी किसी से बातों में मश्ग़ूल थी, लिफ़्ट का दरवाज़ा खुला, बातें करते करते उस ने बिग़ैर देखे लिफ़्ट के अन्दर क़दम रख दिया मगर लिफ़्ट न आई थी और यूं बेचारी खला के अन्दर गिरती हुई चौथी मन्ज़िल से सीधी ज़मीन से जा टकराई और उस का दम निकल गया।

इब्रतनाक अश्आ़र

चल दिये दुन्या से सब शाहो गदा — कोई भी दुन्या में कब बाक़ी रहा ?
जीतने दुन्या सिकन्दर था चला — जब गया दुन्या से ख़ाली हाथ था
लह-लहाते खेत होंगे सब फ़ना — ख़ुशनुमा बाग़ात को है कब बक़ा ?
तू ख़ुशी के फूल लेगा कब तलक — तू यहां ज़िन्दा रहेगा कब तलक
दौलते दुन्या के पीछे तू न जा — आख़िरत में माल का है काम क्या !
माले दुन्या दो जहां में है वबाल — काम आएगा न पेशे ज़ुल जलाल
रिज़्क़ में कसरत की सब को जुस्त-जू — आह ! नेकी की करे कौन आरज़ू
दिल गुनह में मत लगा पछताएगा — किस त़रह़ जन्नत में भाई जाएगा ?
दिल से दुन्या की महब्बत दूर कर — दिल नबी के इ़श्क़ से मा'मूर कर
अश्क मत दुन्या के ग़म में तू बहा — हां नबी के ग़म में ख़ूब आंसू बहा
हो अ़त़ा या रब हमें सोज़े बिलाल — माल के जन्जाल से हम को निकाल

या इलाही कर करम अ़त्तार पर
हुब्बे दुन्या इस के दिल से दूर कर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

आ़लीशान मकानात कहां हैं !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस ! हमारी अक्सरिय्यत आज दुन्या की महब्बत का दम भरती नज़र आ रही है मगर आख़िरत की महब्बत नज़र नहीं आती, जिस को देखो उस को दुन्या की दौलत इकठ्ठी करने दुन्यवी अस्नाद ह़ासिल करने और दुन्याए फ़ानी की अराज़ी (या'नी प्लॉटों) ही की त़लब है। नेकियों और इश्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत, स-नदे मग़्फ़िरत और **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त की अ़ज़ीम ने'मत जन्नतुल फ़िरदौस पाने की ह़िर्स बहुत कम लोगों को है ! ऐ दुन्या के उ़म्दा उ़म्दा मकानात और आ़लीशान महल्लात के त़लब गारो सुनो ! **क़ुरआने पाक** क्या कह रहा है चुनान्चे **अल्लाहु** रह़मान عَزَّوَجَلَّ का पारह 25 **सू-रतुद्दुख़ान** आयत 25 ता 29 में इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है :

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّ عُيُوْنٍ ﴿۲۵﴾
وَّ زُرُوْعٍ وَّ مَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿۲۶﴾
وَّ نَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ﴿۲۷﴾
كَذٰلِكَ ۫ وَ اَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿۲۸﴾
فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ
وَ الْاَرْضُ وَ مَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ﴿۲۹﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कितने छोड़ गए बाग़ और चश्मे और खेत और उ़म्दा मकानात और ने'मतें जिन में फ़ारिग़ुल बाल थे। हम ने यूं ही किया और इन का वारिस दूसरी क़ौम को कर दिया तो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए और उन्हें मोहलत न दी गई।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

पारह **22** **सू-रतुल फ़ातिर** आयत **5** में रब्बुल इ़बाद عَزَّوَجَلَّ का इर्शाद होता है :

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝۵

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो ! बेशक **अल्लाह** का वा'दा सच है तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुन्या की ज़िन्दगी और हरगिज़ तुम्हें **अल्लाह** के हुक्म पर फ़रेब न दे वोह बड़ा फ़रेबी।

ख़ूब तफ़क्कुर कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ूब ग़ौरो तफ़क्कुर कीजिये कि हम इस दुन्या में क्यूं भेजे गए ? हमारा मक़्सदे ह़यात क्या है ? अब तक हम ने अपनी ज़िन्दगी किस त़रह़ गुज़ारी ? आह ! नज़्अ़ व क़ब्र व ह़श्र और मीज़ान व पुल सिरात़ पर हमारा क्या बनेगा ? हमारे वोह अ़ज़ीज़ो अक़ारिब जो हम से पहले दुन्या से रुख़्सत हो गए क़ब्र में न जाने उन के साथ क्या हो रहा होगा ? اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र करने से लज़ाइज़े दुन्या से छुटकारा, लम्बी उम्मीद से नजात और मौत की याद की ब-र-कत से नेकियों की रग़बत के साथ साथ अज्रे कसीर भी ह़ासिल होगा चुनान्चे :

60 साल की इबादत से बेहतर

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "(आख़िरत के मुआ़-मले में) घड़ी भर के लिये **ग़ौरो फ़िक्र** करना 60 साल की इबादत से बेहतर है।" (اَلْجَامِعُ الصَّغِير لِلسُّيُوْطِيّ ص ۳۶۵، حدیث ۵۸۹۷)

70 दिन पुरानी लाश

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" के **म-दनी माह़ोल** में लाखों की बिगड़ियां बन रही हैं, येह अहले ह़क़ की अछूती म-दनी तह़रीक है आइये ! ईमान ताज़ा करने के लिये म-दनी माह़ोल की ब-र-कत की अ़ज़ीमुश्शान **म-दनी बहार** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

3 र-मज़ानुल मुबारक 1426 हि. (8-10-05) बरोज़ ह़फ़्ता पाकिस्तान के मशरिक़ी ह़िस्से में ख़ौफ़नाक ज़ल्ज़ला आया जिस में लाखों अफ़राद फ़ौत हुए, उन्हीं में मुज़फ़्फ़रआबाद (कश्मीर) के अ़लाक़ा "मेरा तनोलियां" की मुक़ीम 19 सालह **नसरीन अ़त्तारिय्या** बिन्ते ग़ुलाम मुर-सलीन जो कि **दा'वते इस्लामी** के ह़फ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाती थीं, फ़ौत हो गईं। मर्ह़ूमा के वालिद और दीगर घर वालों ने 8 जुल क़ा'दतिल ह़राम 1426 हि. (10-12-05) **शबे पीर रात तक़रीबन 10 बजे किसी वज्ह से क़ब्र को खोल**

दिया, यक-बारगी आने वाली ख़ुश्बूओं की लपटों से मशामे दिमाग़ मुअ़त्तर हो गए ! शहादत को 70 अय्याम गुज़र जाने के बा वुजूद नसरीन अ़त्तारिय्या का कफ़न सलामत और बदन बिल्कुल तरो ताज़ा था !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तमाम इस्लामी भाई रोज़ाना वक़्त मुक़र्रर कर के **फ़िक्रे मदीना** कर के म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह (इस्लामी माह) की 10 तारीख़ तक अपने ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाइये और हर माह **कम अज़ कम 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले** में न सिर्फ़ ख़ुद बल्कि दूसरे इस्लामी भाइयों पर **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के उन्हें भी आ़शिक़ाने रसूल के साथ म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ूब ख़ूब ब-र-कतें ह़ासिल होंगी ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

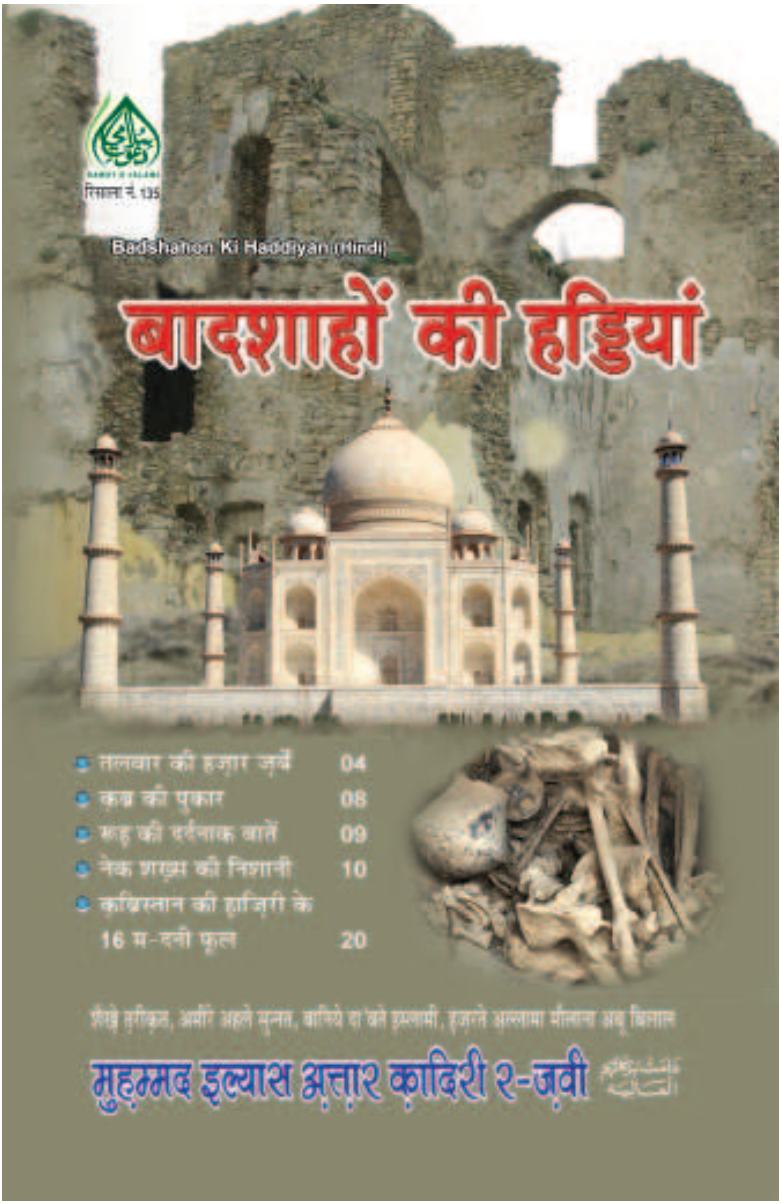

रिसाला नं. 135
Badshahon Ki Haddiyan (Hindi)
बादशाहों की हड्डियां
तलवार की हज़ार ज़र्बें 04
क़ब्र की पुकार 08
रूह की दर्दनाक बातें 09
नेक शख़्स की निशानी 10
क़ब्रिस्तान की ह़ाज़िरी के 16 म-दनी फूल 20
शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमेरात मग़रिब की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि ''**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ'' अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी इन्आमात** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ISBN
0133130

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ अह़मदआबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
❁ देहली :- मक-त-बतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली - 6, फ़ोन : 011-23284560
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
❁ हैदरआबाद :- मक-त-बतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदरआबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 24572786

E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com, Web : www.dawateislami.net